33 ISSN 2455-5169
Peer-reviewed
त्रैमासिक ई-पत्रिका

परिवर्तन

परिवर्तन

साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

सम्पादक
डॉ. महेश सिंह

परिचय

'**परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी**' विमर्श केंद्रित, पीयर रिव्यूड (PEER-REVIEWED) त्रैमासिक ई-पत्रिका (शोध-जर्नल) है। पत्रिका का उद्देश्य साहित्य, संस्कृति और सिनेमा के क्षेत्र में विमर्श व शोध को प्रोत्साहित करना है। कला जगत की विधागत विविधताओं को ध्यान में रखते हुए पत्रिका में कई वैचारिक स्तंभों का प्रावधान किया गया है जो इस प्रकार हैं- भाषा, साहित्य और संस्कृति (आलेख), मीडिया और सिनेमा (आलेख), समकालीन विमर्श (दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श इत्यादि), शोध पत्र, कविता, कहानी, लोक साहित्य, रंगमंच, प्रवासी साहित्य, पुस्तक समीक्षा, साक्षात्कार, अनुवाद इत्यादि।

पत्रिका का मूल उद्देश्य साहित्य और कला के माध्यम से भारतीय सामासिक संस्कृति, भारतीय जीवन-दर्शन तथा इसकी एकता और अखंडता में सहयोगी संभावित वैचारिक विकल्पों का विकास एवं कला जगत के समकालीन प्रतिमानों की खोज है।

कला जगत के प्रमुख हस्ताक्षरों, सृजनकर्मियों और पाठकों का परिवर्तन पत्रिका में स्वागत है। हम उम्मीद करते हैं कि आप सभी अपने सार्थक लेखन और महत्त्वपूर्ण सुझाव के ज़रिये पत्रिका को एक सशक्त वैचारिक मंच के रूप में स्थापित करने हेतु सहायता करेंगे। यह पत्रिका जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्तूबर महीने में नियमित रूप से प्रकाशित की जाएगी।

पत्राचार
महेश सिंह/रामलखन राजौरिया
हिंदी विभाग
पांडिचेरी विश्वविद्यालय
पुद्दुचेरी – 605014

स्थायी पता
ग्राम – भलुआ, पोस्ट – परसिया,
ज़िला - देवरिया
उत्तर प्रदेश – 274 501

PARIVARTANPATRIKA@GMAIL.COM
GGUHINDI@GMAIL.COM
WWW.PARIVARTANPATRIKA.IN
MOB. # +91 9489 246095

उद्घोषणा

पत्रिका के सभी पद अवैतनिक हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकार के अपने हैं, जिससे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता से सम्बंधित या अन्य किसी भी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होगा। रचना चयन का अंतिम अधिकार संपादक के पास सुरक्षित है। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र चेन्नई (CHENNAI) होगा।

© PARIVARTANPATRIKA 2016
ALL RIGHT RESERVED.

ISSN 2455-5169
परिवर्तन

अनुक्रमणिका

संपादकीय

उल्लुओं के गाँव में प्रवास का एक महिना — डॉ. महेश सिंह/1

आलेख/शोध-आलेख

विश्व चेतना के आंगन का दीपक : गोरा — डॉ. नितेश व्यास/3
कौन बताएगा बूंद से आँसू कितना भारी है ! — शैलेन्द्र कुमार शुक्ल/8
कश्मीर में संत परम्परा : एक विवेचन — प्रो. रूबी जुत्शी/13
एक आदिवासी भील सम्राट ने प्रारंभ किया था 'विक्रम संवत' — जितेन्द्र विसारिया/19
प्रेम में मुक्ति का संदेश देती संघर्ष-यात्रा — पुनीता जैन/28
सिक्ख धर्म में गुरु नानक देव की शिक्षाएं — सतवंत कौर/35
भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर डॉ. अंबेडकर के विचार — अतुल कुमार/40
किन्नौरी देव परंपरा में वाद्ययंत्रों की साधकता — दीपमाला एवं डॉ. प्रीति सिंह/44
कृष्ण-काव्य परंपरा में प्रेम और अध्यात्म — किशन सरोज/47
सामाजिक-सांस्कृतिक-परिवर्त्तन में मीराबाई की भूमिका — चन्दन कुमार/53
कर्म आस्था, एवं आध्यात्मिकता की अद्‌भुत गाथा : प्रहलाद एक महाकाव्य — डॉ. अमरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं डॉ. तरु मिश्रा/58
समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में समसामयिक संदर्भ — डॉ. पूनम देवी/64
'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री जीवन के चित्र — डॉ. सारिका देवी/72
श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में मध्यवर्ग की भूमिका — डॉ. शिप्रा श्रीवास्तव 'सागर'/76
इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के चर्चित हिन्दी उपन्यासों में समकालीन जीवन-मूल्य : स्वार्थयुक्त व्यक्ति और उसकी मानसिकता — डॉ. जमुना सुखाम/81
'वह लड़की' उपन्यास में चित्रित दलित नारी का अंतर्द्वंद्व — डॉ. उषा/84
मृदुला गर्ग की कहानी में स्त्री चेतना के स्वर — डॉ. उर्मिला शर्मा/88
विभाजन की त्रासदी और राज़ी सेठ की कहानियाँ — कोमल कुमारी/92
(विशेष संदर्भ:'मुलाकात', 'रुको इंतजार हुसैन', 'बाहरी लोग', 'किसका इतिहास')
जयराम सिंह गौर' की कहानियों में ग्रामीण संवेदना एवं मूल्य-दृष्टि — डॉ. रहीम मियाँ/95
वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे हिंदी भाषा की दशा और दिशा — डॉ. नितीन कुंभार/99
स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी पत्रिकाओं की भूमिका — दिगंत बोरा/104

नाटक/रंगमंच

भारतीय रंगमंच में स्त्रियों की उपस्थिति का प्रश्न व निर्देशिका के रूप में उनकी भूमिका — आरती/107
खमनाट्य : कोरकू जनजाति का लोकनाट्य — डॉ. नितप्रिया प्रलय/114

मीडिया और सिनेमा

आंचलिक पत्रकारों की सामाजिक स्थितियों का अध्ययन — अंकिता पटेल/119
(उत्तर प्रदेश के महराजगंज जिला के संदर्भ में)

कहानियाँ

अधज़गी रातों के सपने — डॉ. रंजना जायसवाल/125
स्मरण — डोली शाह/136
बसंती — डॉ. टिकेश्वर प्रसाद जंघेल/141
मौसीबाड़ी के तीन दिन — डॉ. अमरेन्द्र सुमन/144
जीवन का अंतिम प्रहर — सतीश 'बब्बा' /149

कविताएँ

यदुवंश यादव की कविताएँ/152
डॉ. सुनील कुमार शर्मा की कविताएँ / 154

पुस्तक समीक्षा

प्रकृति, समाज, प्रेम, संस्कृति और नदियों को बयां करती कविताएँ — विरेश 'श्रीराजे'/156
साधारण से असाधारण की यात्रा : रामनगीना मौर्य की कहानियाँ — डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी/164

ISSN 2455-5169
परिवर्तन

किन्नौरी देव परंपरा में वाद्ययंत्रों की साधकता

दीपमाला एवं डॉ. प्रीति सिंह

हिमालय देव-संस्कृति का प्रतिरूप होने के साथ ही परोक्ष देव भी हैं। हिमाचल के अनंत देवी-देवता हिमालय के ही भू-खंड में विविध रूपों में अध्यासीन हैं। देश-विदेश में हिमाचल प्रदेश 'देवभूमि' संज्ञा से प्रख्यात है। देवभूमि का नाम श्रवण होते ही हिमाचल और हिमालय स्वत: ही हमारे चक्षुओं के समक्ष प्रतिबिंबित होने लगता है। हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक जिले में देवी-देवताओं का वास माना जाता है। हर एक शैल श्रृंग पर ग्राम-देवता विराजमान हैं। देवी-देवताओं को किन्नौरी समुदाय व क्षेत्र में सर्वोपरि स्थान प्राप्त हैं। किन्नौर हिमाचल का एक ऐसा जिला है, जहाँ की देव-संस्कृति यहाँ के आम जनमानस के जीवन को पूर्णतया प्रभावित करती है।

अंतकरण को मोह लेने वाला आगाध सुरम्य किन्नौर एक पवित्र स्थल है। शिव का धाम माने जाने वाली शिखर श्रृंग 'किन्नर कैलाश' भी इसी भू-खंड में है। अनेक लघु व वृहद शैल श्रृंग इस प्रदेश में है। किन्नर कैलाश के अतिरिक्त 'रिवोपुरग्युल' पर्वत आख्यात है। इस अंचल को इसी नाम से जाना जाता है और इसे आंचलिक अभिरक्षक देवता के रूप में मान्यता प्राप्त है। किन्नर कैलाश किन्नौर का प्रमुख अनुकर्षण माना जाता है। यह इस क्षेत्र के लोगों को अनेक प्रकार के व्यवधानों में भी स्थिर रहने के लिए प्रोत्साहित करता है। किन्नर कैलाश विविध धर्मों के अनुयायियों के लिए पुण्य केतन है।

बौद्ध पंथ के जन इसे अपने आराध्य देव चक्रसम्वर और वज्रवराही का स्थल मानते हैं। हिन्दू अपने अभिवंदनीय शिव और पार्वती का अधिष्ठान मानते हैं। अत: विभिन्न पंथ के लोग इसकी प्रदक्षिणा में आस्था रखते हैं। परिभ्रमण पथ प्राकृतिक अड़चन अर्थात हिम से आच्छादित होने के कारण बारह माह इस की प्रदक्षिणा करना असंभव होता है।यहाँ बहुधा शिलाखंड तिकोनाकार या शंकु आकृति के होते हैं। परंतु यह उत्कृष्ट पाषाण अपने वास्तविक स्वरूप व उच्चता के फलस्वरुप अगल-बगल की अनियारी शिलाओं से परिवेष्टित होने के कारण ही पृथक दृष्टिगोचर होती हैं। किन्नौर क्षेत्रीय जन समुदाय किन्नर कैलाश को क्षेत्रीय बोली में 'रल्दड.' कहते हैं तथा इसके परिभ्रमण को 'रल्दड. कोरा' कहते हैं। इस क्षेत्र विशेष में यह प्राचीन धारणा है कि यहाँ पर यमलोक भी है, जहाँ पर मानव पंचतत्व में विलीन होने तदंतर यही जाता है। इस स्थान में एक पाषाण सीधा अनुदैर्ध्य है जो शिवलिंग तुल्य प्रतीत होता है। संपूर्ण जनसमुदाय की इसमें विशिष्ट आस्था है।[1]

निसन्देह: यह शिला शिवलिंग की मान्यता प्राप्त कर चुकी है। इसके मुख्य शिखर पर जब सूर्य रश्मि पड़ती है तो उसकी प्रभा के साथ ही प्रभात से संध्या तक यह तीन नाना वर्णों में परिवर्तित होती है। अरुणोदय से पूर्व व सांयकाल के पश्चात इसका वर्ण इसके इर्द-गिर्द की शिलाखंडों के अनुरूप गहरा होता है। अरुणोदय होते ही इसका वर्ण परिवर्तित होने लगता है। प्रारंभ में यह हल्की गुलाबी वर्ण की होती है और मध्याह्नतर तक इसका रंग तुहिन के समान श्वेत प्रतीत होने लगता है। धीरे-धीरे पुनः यह गुलाबी वर्ण में रूपांतरित हो जाती है। इस संपूर्ण नैसर्गिक घटनाक्रम को यहाँ के स्थानीय लोग किसी दैवीय शक्ति का करिश्मा मानते हैं। क्योंकि शिलाखंड एक ऐसे शिखर पर अधिष्ठित है जहाँ पर किसी भी दिशा से गमन अत्यंत दुर्गम है। इस स्थान पर कई श्रद्धालुओं का आगमन इस शिवलिंग के दर्शन हेतु भिन्न-भिन्न भागों से होता हैं।

किन्नर जो कि देवयोनि कही जाती है, उसका देवताओं से पूर्वकालिक समय से ही घनिष्ठ संबंध रहा है। किन्नरों की देवताओं के प्रति आस्था प्राचीनतम है। इसी कारण देवताओं का प्रभुत्व किन्नौर के प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगत होता है। इस जिले के देवी-देवता अत्यंत शक्तिशाली होते हैं और मानव जीवन में एक नई स्फूर्ति भर देते हैं।